पुण्यतिथि पर विशेष...

बापदादा की सच्ची गोपी दीदी मनमोहिनी

दीदी मनमोहिनी जी का लौकिक नाम गोपी था और वे एक धनाढ्य परिवार से यज्ञ में अपनी लौकिक माँ और बहिनों के साथ समर्पित हुई थी। उनका बाबा से अटूट प्यार होने के कारण, बाबा के मुख से जो कुछ निकलता दीदी उसे प्रैक्टिकल स्वरूप में अवश्य लाती। भारत में सन् 1952 से जब सेवायें शुरू हुई तो दीदी इलाहाबाद और दिल्ली में सेवा के निमित्त बनी और कई वर्षों तक दिल्ली, कमलानगर सेवाकेन्द्र में रहकर अपनी सेवायें देती रहीं। सन् 1965 में मातेश्वरी ने अपने भौतिक शरीर का त्याग किया, उसके बाद बाबा ने दीदी को मधुबन में अपने साथ सेवा पर रखा। दीदी यज्ञ की हर आंतरिक कारोबार को देखती और यज्ञ-वत्सों का पूरा ध्यान रखती। दीदी मनमोहिनी और दादी प्रकाशमणि जी की अलौकिक जोड़ी के लिए प्रसिद्धि थी कि शरीर दो हैं, आत्मा एक है। दीदी ने कहा, दादी ने किया, दादी ने कहा, दीदी ने किया। दीदी-दादी ने सेवासाथियों को और आने वाले जिज्ञासुओं को मात-पिता की पूरी भासना दी। ब्रह्माकुमार राजू भाई (मुरली विभाग, मधुबन) को दीदी के संग का विशेष सौभाग्य प्राप्त है। उनकी विशेषताओं और गुणों का वे आँखों देखा तथाअनुभव किया हुआ सुंदर वर्णन कर रहे हैं – सम्पादक

सन् 1971 में प्रथम बार मधुबन आया और मुझ आत्मा को दीदी मनमोहिनी जी के सानिध्य में रहने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद दीदी-दादी यज्ञ में आने वाले हर पत्र का जवाब स्वयं लिखती थीं। प्रात: की दिनचर्या में मुरली क्लास के पश्चात सवेरे 10 बजे तक यही सेवा होती थी। मैंने मधुबन में आते ही हिन्दी टाइप सीखी और साथ में सिन्धी पढ़ना सीखा, इसलिए मुझे दीदी जी के साथ रहने वा पत्र लिखने का सुअवसर प्राप्त हो गया। दीदी का बाबा की मुरली से अति प्यार था, दादी जी क्लास में जब मुरली सुनाती तो दीदी मुरली सुनते-सुनते बहुत अच्छे प्रश्न निकालती और मुरली के पश्चात् सभी से प्रश्न पूछती और मुझे बुलाकर कहती, आप इन प्रश्नों को टाइप करके ले आओ, जिन्हें पत्रों का उत्तर जा रहा है उन्हें प्रश्न-उत्तर रूप में ज्ञान-रत्नों का खज़ाना भी भेज दें। इस प्रकार, अंतर्देशीय पत्र पर एक तरफ मुरली के प्रश्न-उत्तर होते और सार रूप में दूसरी तरफ पत्रों का उत्तर होता।

एक-एक का व्यक्तिगत ध्यान

दीदी जी की विशेषताओं की तो बहुत लम्बी लिस्ट है। दीदी जी ने मुझे बहुत स्नेह की शक्तिशाली पालना दी, दीदी हम सबके साथ ब्रह्माभोजन करती, ज्ञान-योग की चिटचैट करती और यदि हम कोई यज्ञ की सेवा करते तो विशेष खातिरी (आवभगत) करती। मैं एक छोटे गांव से आया था, पढ़ाई भी इतनी नहीं थी, उम्र भी केवल 15-16 वर्ष थी, दीदी जी ने अलौकिक माँ के रूप में मुझे पालना दी। अगर हम समर्पित भाई-बहनें किसी कारण से क्लास में लेट आते या नहीं पहुंचते, तो क्लास के बाद दीदी अपने कक्ष में बुलाती और पूछती कि आपकी तबियत ठीक है? नाश्ता किया है? फिर प्यार से कहती, आज सवेरे योग वा क्लास में नहीं देखा, कहाँ थे? इस प्रकार एक-एक काव्यक्तिगत स्व-उन्नति पर ध्यान खिंचवाकर उनकी ज्ञान-योग-धारणा की नींव मज़बूत करती थी। छोटी-छोटी बातों पर ध्यान दीदी हर छोटी-छोटी ईश्वरीय मर्यादा पर भी ध्यान खिंचवाती थी। उस समय यज्ञ बेगरी पार्ट से पार हो रहा था, इसलिए वे यज्ञ की एक-एक चीज़ की कीमत सुनाती। कभी एक रूमाल भी गुम न हो इसलिए उस पर नाम डालना सिखाती। कमरों में कैसे सफाई रखनी है, कपड़ों को कैसे सेट करके (तह करके) रखना है (उस समय कपड़े प्रेस नहीं होते थे), फटे हुए कपड़ों को सिलाई करके पहनना, भोजन में भी कोई चीज़ व्यर्थ न जाये, ऐसे एक-एक छोटी बात पर भी दीदी सभी का ध्यान खिंचवाती। एकव्रता, एकनामी दीदी सदा सच्ची गोपिका बनकर, एकव्रता होकर रही। कभी किसी में आंख नहीं डूबी। हम सबको भी एक-व्रता का पाठ पढ़ाया। दीदी को हमारा साधारण बोलचाल, हंसीमज़ाक अच्छा नहीं लगता था। अगर कोई बाह्यमुखता में आकर ज़ोर से हंसता या बोलता या अकेले में छिपकर बातें करता, तो दीदी उसका तुरंत ध्यान खिंचवाती। ईश्वरीय मर्यादायें हमेशा सुनाती और कहती, सदा भाई-भाई वा भाई-बहिन की पवित्र दृष्टि से एकदो को देखना वा व्यवहार करना। किसी में अपवित्रता का अंश भी ज्ञानामृत दिखाई देता या कोई करता तो दीदी शिकायत सुनकर उसी समय उसे अपने पास बुलाती और उसका ध्यान खिंचवाती। कभी-कभी शिकायत करने वाले को भी सामने बुलाकर उसी समय उस बात को समाप्त कर देती। इससे कभी व्यर्थ और नकारात्मक वायुमण्डल नहीं बनता। दीदी जी साफ शब्दों में कहती, जब तुमने पुरानी दुनिया छोड़ दी, देह और देह के संबंध का त्याग किया, फिर पीछे मुड़कर क्यों देखते हो। अगर वापस जाना है तो जा सकते हो लेकिन यज्ञ की मर्यादा है ''सम्पूर्ण पवित्रता'', मन-वचनकर्म से इस मर्यादा का अवश्य पालन करना है, एकव्रता, एकनामी होकर रहना है। कम खर्च बालानशीन दीदी जी एकॉनामी (बचत) का अवतार थी। दीदी सदा कहती, यज्ञ की एक-एक कौड़ी मुहर बराबर है। कभी एक भी पैसा व्यर्थ नहीं गंवाना, कम खर्च बालानशीन। कोई भी चीज़ अच्छे से अच्छी हो लेकिन खर्चा कम हो। ठण्डी के दिनों में एक बार दीदी ने मुझे अपने पास बुलाया और पूछा, तुम्हारे पास गर्म कपड़े हैं? मैं तो लौकिक घर से गर्मियों में आबू आया था इसलिए गर्म कपड़े नहीं थे। दीदी ने कहा, तुम्हें आबू की ठण्डी का मालूम नहीं है, यहाँ बहुत ठण्डी पड़ती है और फिर मुझे एक काले रंग का स्वेटर दिया। इस रंग के कारण मेरा चेहरा शिकायत थोड़ा बदलता हुआ देखकर कहा, इसे कुर्ते के अन्दर पहनना, ठण्डी नहीं लगेगी। काला है तो क्या हुआ, यह बहुत गर्म है। ऐसे ही अगर कोई लौकिक घर से अच्छी चीज़ें लेकर आता तो दीदी कहती, यह यज्ञ में जमा कर दो, नहीं तो तुम्हें उनकी याद सतायेगी। तुम्हें यज्ञ से जो मिलता है वही पहनना है, वही खाना है, तो तुम्हें बाबा याद रहेगा। नम्बरवन स्टूडेन्ट दीदी का योग और पढ़ाई पर बहुत ध्यान था। सदा कहती, पढ़ोगेलिखोगे तो बनोगे नवाब...। सबसे पहले अमृतवेले 4 बजे योग कराने खुद पहुंच जाती। योग में दीदी विशेष एकाग्रचित होकर ऐसे बैठती जो आंख भी नहीं झपकती। दीदी की दृष्टि से कई भाई-बहिनों को बाबा का और सतयुगी नई दुनिया का साक्षात्कार हो जाता। उनके नयनों से बाबा के प्यार में मोती झलकते दिखाई देते थे। फिर क्लास में जाते अपने हाथ में डायरी पेन लेकर जाती। सबको कहती, स्टूडेन्ट लाइफ इज़ द बेस्ट लाइफ, हम सब स्टूडेन्ट हैं, कभी अपने को टीचर नहीं समझना। टीचर बनना है तो पहले स्वयं के टीचर बनो, स्वयं को पढ़ाओ। अपने आप से बातें करना सीखो। रात्रि के समय क्लास में पहले जाकर बैठ जाती और देश-विदेश की सेवाओं के जो समाचार आते उन्हें सुनाने के लिए कहती। अव्यक्त बापदादा के वरदान नोट करने कासौभाग्य मुझे मिला था। दीदी मुझे रात्रि क्लास में सुनाने के लिए गद्दी पर बिठाती और खुद (दीदी-दादी) सामने बैठकर बाबा के महावाक्य सुनती। मैं बड़ी हूँ, यह अंहकार उन्हें कभी छू भी नहीं पाया।

रमणीकता के साथ मिलनसार

दीदी बहुत रमणीक थी, सबके साथ खेलपाल भी करती, उसमें कुछ न कुछ अलौकिक हंसी के लिए प्रोग्राम बनाती। मिलनसार हो कभी चेयर रेस (कुर्सी दौड़) कराती तो कभी बैडमिन्टन साथ में खेलती। हिस्ट्री हाल में सबके साथ बैठकर ब्रह्माभोजन खाती और कभी अपने पर्सनल डाइनिंग रूम में छोटे ग्रुप के साथ भोजन करती, भोजन के बाद फल की प्लेट सबको देती। फिर ज्ञान युक्त रमत-गमत,शायरी, चुटकुले आदि सुनती और सुनाती। इसके साथ-साथ दीदी की नज़र विशेष रहती कि हर एक की दृष्टि-वृत्ति में कहाँ तक रूहानियत आई है, कौन कितनी ईश्वरीय मर्या-दाओं का पालन करता है। ड्रेस, हाव- भाव, चाल-चलन को देखकर दीदी समझ लेती और उसी अनुसार समयपर सावधान करती, ईश्वरीय मर्या- दाओं पर ध्यान खिंचवाती।

परखने की अद्भुत शक्ति

दीदी की बुद्धि बहुत स्वच्छ थी इसलिए सामने आने वाले हर व्यक्ति की भावनाओं को परख लेती थी और उनसे सम्पर्क में आते, उनकी हर मनोकामना को पूरी कर उन्हें बाबा पर समर्पित करा देती थी। बड़े-बड़े वी.आई.पीज़ को भी दीदी ने नियमित विद्यार्थी बना दिया। दीदी की नज़र हर एक की विशेषता पर जाती और उस अनुसार उसे सेवा में लगा देती। दीदी के सामने 'हाँ जी' कहा माना दीदी का दिल जीता। दीदी को बहस करना अच्छा नहीं लगता था। वे हमेशा कहती, तुम 'हाँ जी' करते चलो, बाबा तुमसे सब कुछ अपने आप करा लेगा। करावनहार बाबा बैठा है, हम सब तो कठपुतलियां हैं। अपनी बुद्धि अधिक नहीं चलाओ, श्रीमत के पट्टे पर चलते चलो तो कभी कोई अकर्त्तव्य नहीं होगा। मनमत, परमत के प्रभाव से सदा मुक्त रह, परचिंतन, परदर्शन को छोड़ स्वचिंतन करते अपनी उन्नति करते चलो।

निर्भय और अडोल स्थिति

दीदी जी अन्दर बाहर सच्ची और साफ थी इसलिए निर्भय रहती थी। यज्ञ के सामने कई प्रकार के पेपर आये लेकिन दीदी बड़ी सरलता के साथ अचल-अडोल स्थिति में रह यज्ञ को आगे बढ़ाने में अग्रसर रही। दीदी का उमंग-उत्साह कभी कम नहीं देखा। दीदी यही कहती, जिसका साथी स्वयं सर्वशक्तिवान, सर्व समर्थ भगवान है, उसके लिए माया के आंधी-तूफान क्या बड़ी बात हैं। सच की नईया हिलती-डुलती है लेकिन डूब नहीं सकती। दीदी का बाबा में, नई दुनिया की स्थापना के कार्य में, परिवार में और स्वयं में अटूट निश्चय था इसलिए सदा निश्चिंत स्थिति में रही और सबको निश्चिंत बनाया। कोई भी बात आती तो दीदी सबको कहती, अखण्ड योग करो, योग से सब विघ्न स्वत: समाप्त हो जायेंगे, योग ही सब बीमारियों की दवाई है।

साक्षीद्रष्टा और उपराम

अव्यक्त होने के पहले से ही दीदी जी यज्ञ की कारोबार को सम्भालते हुए भी साक्षीद्रष्टा बनती गई। कारोबार के विस्तार की बातें दीदी ने सुनना बन्द कर दिया, अगर कोई किसी की बात सुनाता तो दीदी जैसे सुनते भी नहीं सुनती। सबको बार-बार यही मन्त्र याद दिलाती कि अब घर जाना है, इन बातों को छोड़ो, हमें तो बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है। दीदी मधुबन से स्वास्थ्य जाँच के लिए मुंबई गई, वहाँ डाक्टर्स ने एक छोटे ट्युमर का आपरेशन किया, उसी हॉस्पिटल में दीदी कुछ दिन कोमा में रही और 28 जुलाई, 1983 को भौतिक शरीर का त्याग कर बापदादा की गोदी में एडवांस पार्टी के साथ सेवा में जुड़ गई। उनके पार्थिव शरीर को मुंबई से आबू लाया गया और 30 जुलाई को हज़ारों भाई-बहिनों ने श्रद्धा-सुमन अर्पित करते उन्हें अन्तिम विदाई दी। दीदी की प्यार भरी पालना का रिटर्न यही है कि हम उनके स्थापित आदर्शों पर पूर्णरूपेण चलें।

ओम शान्ति